स्कूल दुबारा खुलने के बाद शिक्षण-अधिगम | एक नैदानिक दृष्टिकोण

आँचल चोमल व शिल्पी बनर्जी

मार्च 2020 के बाद से स्कूल व शिक्षा की दशा

भारत में स्कूल मार्च 2020 से बन्द हैं। इस समय से अब तक बच्चों को शिक्षकों व स्कूल के दोस्तों से आमने-सामने संवाद करने का मौक़ा नहीं मिला है। इस डेढ़ साल में ऑनलाइन शिक्षा के कई मॉडल उपयोग करके देखे गए हैं। इन तमाम मॉडलों की प्रभावोत्पादकता का अनुमान लगाने के लिए किए गए अध्ययनों से पता चला कि सूचना तकनीक और इंटरनेट तक पहुँच में भारी असमानताएँ और विभाजन हैं। साथ ही सही मायने में सीखना सम्भव बनाने में ऑनलाइन माध्यम सर्वथा अपर्याप्त हैं (यूनिसेफ 2020; अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, *मिथ्स ऑफ़ ऑनलाइन एजुकेशन, 2020*)। पूरे देश में शिक्षा से जुड़े लोगों और अभिभावकों ने इस बात को लेकर चिन्ता ज़ाहिर की कि ऑनलाइन माध्यम बच्चों की उन अकादमिक व सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतों को व्यक्तिगत स्तर पर पूरी करने में उतने कारगर नहीं हैं जो सार्थक अधिगम की बुनियाद होते हैं। ऐसे में, इस बात से हमें कोई आश्चर्य नहीं होता कि स्कूल जाने वाले ज़्यादातर बच्चों ने इस दौर में कुछ भी ख़ास नहीं सीखा। यही नहीं, वे 'अधिगम हानि' (learning loss) या 'अकादमिक प्रतिगमन' (academic regression) की स्थिति में फँसे दिखाई देते हैं। यानी पहले से सीखी गई अवधारणाओं को भूल जाने की स्थिति।

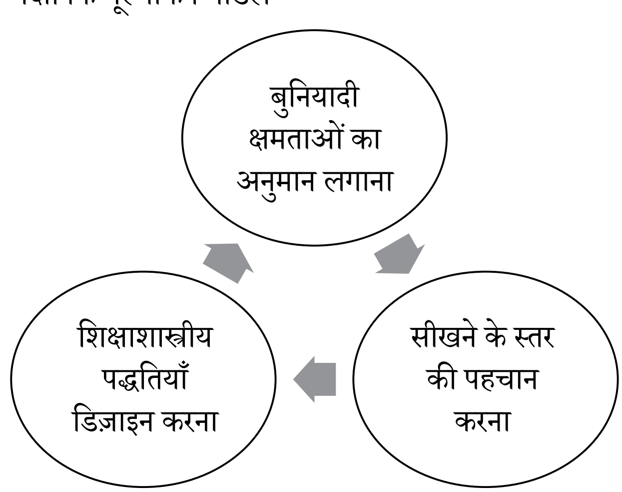
> अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा पूरे देश में 16,067 विद्यार्थियों पर किए गए एक अध्ययन *लॉस ऑफ़ लर्निंग ड्यूरिंग द पेंडेमिक* में यह पाया गया कि, 'सभी कक्षाओं में 92 प्रतिशत बच्चों ने औसतन पिछले साल सीखे किसी एक ख़ास भाषाई कौशल को खो दिया है। मिसाल के तौर पर, ऐसे कुछ कौशल हैं किसी चित्र या अपने किसी अनुभव का मौखिक विवरण देना; परिचित शब्दों को पढ़ना; समझ के साथ पढ़ना; किसी चित्र के आधार पर सरल वाक्य लिखना। इसी तरह, सभी कक्षाओं में 82 प्रतिशत बच्चों ने औसतन पिछले साल सीखे किसी एक ख़ास गणितीय कौशल को खो दिया है। मिसाल के तौर पर, इन कुशलताओं में एक या दो अंकों वाली संख्या को पहचान पाना; संख्या गणित की क्रियाएँ कर पाना; बुनियादी संख्या गणितीय क्रियाओं का इस्तेमाल कर समस्या समाधान कर पाना; दो या तीन आयामी आकारों का विवरण दे पाना; दिए गए आँकड़ों को पढ़ कर उनसे नतीजे निकाल पाना।' (पेज 4, *लॉस ऑफ़ लर्निंग ड्यूरिंग द पेंडेमिक*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, 2020)

ऐसी स्थिति में एजुकेटरों के लिए विद्यार्थियों के वर्तमान अधिगम स्तर को ध्यान में रखना ज़रूरी हो जाता है। यह काफ़ी हद तक सम्भव है कि जो विद्यार्थी इस समय पाँचवीं कक्षा में हैं उनका अधिगम स्तर उनकी कक्षा के समकक्ष न हो और इसकी वजह वही अधिगम हानि है जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है। अब जबकि स्कूल दुबारा खुलने की तैयारी कर रहे हैं, हमारे सामने कई ज़रूरी सवाल खड़े हैं। जैसे कि, हम यह फ़ैसला कैसे करें कि क्या पढ़ाना है? हम अपनी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं को विद्यार्थियों के सीखने के मौजूदा स्तर के अनुरूप कैसे बनाएँ? विद्यार्थियों के सीखने के स्तर को समझने के लिए हमें किस तरह की नैदानिक मूल्यांकन पद्धतियाँ अपनानी चाहिए? एक बहुस्तरीय कक्षा में जहाँ शिक्षार्थियों की विविध ज़रूरतें हों वहाँ पाठ्यक्रम का पुनर्गठन और कक्षा में उसका संचालन किस तरह से किया जाना चाहिए? ऐसे जिन महत्त्वपूर्ण सवालों से आज समूचा शिक्षा समुदाय जूझ रहा है उनका जवाब हम नैदानिक मूल्यांकन पद्धति का इस्तेमाल करके देने की कोशिश करेंगे।

शिक्षण-अधिगम का नैदानिक मूल्यांकन मॉडल

इस मॉडल में स्कूलों व एजुकेटरों के सामने खड़े इन सवालों को सुलझाने के लिए तीन स्पष्ट चरणों का सुझाव दिया गया है।

नैदानिक मूल्यांकन मॉडल



चरण-1 : हर चरण की बुनियादी योग्यताओं का अनुमान लगाना। इन योग्यताओं को सीखने की सीढ़ी पर बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करना होगा ताकि शिक्षक कक्षा में मौजूद अलग-अलग स्तर के शिक्षार्थियों की ज़रूरतों को पूरी करने में मदद कर सकें।

चरण-2 : सीखने की सीढ़ी पर विद्यार्थियों की बुनियादी योग्यताओं की पहचान या निदान करना। इस तरह का नैदानिक मूल्यांकन विविध प्रकार की पद्धतियों और सन्दर्भों का इस्तेमाल कर किया जा सकता है।

चरण-3 : नैदानिक मूल्यांकन के नतीजों के अनुरूप शिक्षा शास्त्रीय पद्धतियाँ डिज़ाइन करना। यह पद्धतियाँ कक्षा में मौजूद विद्यार्थियों/ उनके समूहों को उनके अनुरूप अलग-अलग निर्देश देने का आधार बननी चाहिए।

चरण-1 : बुनियादी योग्यताओं का अनुमान

अगर हम यह सोचें कि स्कूलों के दुबारा खुलने के बाद सबसे बड़ा सवाल कौन-सा होगा तो वह यह है : कक्षा में आख़िर क्या किया जाए? मान लीजिए कि आप पाँचवीं कक्षा की शिक्षक हैं जो सभी विषयों को पढ़ाती थीं। पिछली बार आपने अपने विद्यार्थियों को तब देखा था जब वे तीसरी कक्षा में थे। आपने पिछले 18 महीने उनको ज़्यादातर ऑनलाइन और थोड़ा-सा ऑफ़लाइन मोड में पढ़ाया है। जब वे स्कूल आएँगे तब आप शुरुआत कहाँ से करेंगी? एक दूसरा उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए आप किसी सरकारी स्कूल में प्राइमरी के शिक्षक हैं और आपकी कक्षा में पहली से पाँचवीं तक के बच्चे हैं। आपने पिछले 18 महीने उनके साथ कुछ सामुदायिक/ मोहल्ला क्लास चलाए हैं और अब वे बच्चे स्कूल वापस आ गए हैं। इस बहु-कक्षाई स्थिति से जूझने की शुरुआत कहाँ से करेंगे? पिछली बार आपने अपने विद्यार्थियों के साथ संवाद तब किया था जब वे दूसरी कक्षा में थे और आपने उनको दो अंकों की संख्याएँ गिनना या जोड़ना सिखाया था। अब आपको उन्हें क्या सिखाना चाहिए — गुणा करना या कुछ और?

शुरुआत कहाँ से करें?

क्या सिखाना है इसका फ़ैसला करने से पहले अधिगम परिणामों (learning outcomes) या योग्यताओं की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी होगा। सीखने में हुए नुक़सान की वजह से शिक्षक के लिए यह निश्चित करना बहुत मुश्किल होगा कि किस स्तर या कक्षा की पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम और अधिगम परिणामों को सन्दर्भ बिन्दु की तरह इस्तेमाल करें। ऐसी स्थिति में शिक्षक को स्कूल के सभी विषयों की ज़रूरी व बुनियादी योग्यताओं के सुव्यवस्थित सेट की ज़रूरत होगी। इन योग्यताओं का इस्तेमाल शिक्षण की शुरुआत के लिए किया जा सकता है।

बुनियादी योग्यताओं की पहचान के लिए कुछ सिद्धान्त :

यह उस विषय के सबसे बुनियादी तत्व होने चाहिए। मिसाल के लिए, गणित में गिनती करना, भाषा में पठन करना आदि।

यह ऊँची कक्षाओं में दूसरी योग्यताओं को हासिल करने का ज़रिया होने चाहिए। मिसाल के लिए, जब तक कोई बच्ची गिनती करना नहीं सीख पाती है तब तक उसमें संख्याओं की समझ नहीं बनेगी। इसी तरह, जब तक बच्ची शब्दों की पहचान करना नहीं जानती है पूरे वाक्य नहीं पढ़ सकेगी।

बुनियादी योग्यताओं का नमूना

क्षेत्र	स्तर-1 की योग्यताएँ – पहली व दूसरी कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप	स्तर-2 की योग्यताएँ – तीसरी व चौथी कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप	स्तर-3 की योग्यताएँ – पाँचवीं कक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप
पठन योग्यताएँ	1.1 हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों की आकृति व ध्वनि को पहचानते हैं। 1.2 पाठ्यपुस्तकों में आमतौर पर पाई जाने वाली जानी-पहचानी वस्तुओं के नाम पहचान कर पढ़ पाते हैं (जैसे कि आम, अनार, ख़रगोश आदि)	2.1 छोटे वाक्य, कहानियाँ व कविताएँ पढ़ पाते हैं। 2.2 अपने स्तर व पसन्द के अनुसार तरह-तरह की पाठ्य सामग्री को आनन्द के साथ पढ़ते हैं (जैसे कि कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि)।	3.1 अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री (जैसे कि अख़बार, बाल पत्रिकाएँ, होर्डिंग आदि) को पढ़ कर समझ सकते हैं।

चूँकि हम बुनियादी योग्यताओं को सीखने की सीढ़ी की बात कर रहे हैं इसलिए इन योग्यताओं को श्रेणीबद्ध करना भी ज़रूरी है। इसके पायदान अलग-अलग दर्जे की कक्षा में अपेक्षित अधिगम परिणामों के अनुसार हो सकते हैं। मिसाल के लिए, स्तर-1 को पहली व दूसरी कक्षा के स्तर की योग्यताओं के अनुरूप रखा जा सकता है और इसी तरह स्तर-2 को तीसरी व चौथी कक्षा की योग्यताओं के अनुरूप।

अलग-अलग कक्षाओं की योग्यताओं को एक साथ रखना ज़रूरी है क्योंकि यह सम्भव है कि विद्यार्थियों में अधिगम किसी एक निश्चित कक्षा के समकक्ष की योग्यताओं के अनुसार न हो। मिसाल के लिए, यह सम्भव है कि चौथी कक्षा का कोई विद्यार्थी किसी विषय के एक क्षेत्र में योग्यता के पहले स्तर पर हो और दूसरे क्षेत्र में दूसरे स्तर पर।

इन योग्यताओं की जटिलता बढ़ते क्रम में होनी चाहिए। इससे शिक्षक को कक्षा में मौजूद बहु-स्तरीय शिक्षार्थियों की ज़रूरतें पूरी करने में मदद मिलेगी।

ऊपर जो नमूना दिया गया है उसमें पहली से पाँचवीं कक्षा तक पठन के कौशल से जुड़ी बुनियादी योग्यताएँ बढ़ते क्रम में दी गई हैं। स्कूल के दूसरे विषयों के अलग-अलग क्षेत्रों के लिए ऐसी सूचियाँ बनाई जा सकती हैं।

चरण-2 : सीखने के स्तर का निदान

जैसा कि पहले ज़िक्र किया गया है, जब बच्चे स्कूल लौटेंगे तब एक ही कक्षा के बच्चों के सीखने के स्तर में बहुत अन्तर देखने को मिल सकता है। साथ ही, यह उनकी कक्षा के अनुसार अपेक्षित स्तर से कम भी होगा। बच्चों को वापस पटरी पर लाने के लिए शिक्षक को अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का पता होना चाहिए। इस स्थिति में सीखने में हुई कमियों की पहचान के लिए बुनियादी योग्यताओं से जुड़े नैदानिक मूल्यांकनों का इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार के लिए कक्षा में उपयुक्त तौर-तरीक़े अपनाने में मदद मिलेगी।

नैदानिक मूल्यांकन आमतौर पर सीखने की प्रक्रिया की शुरुआत में किए जाते हैं ताकि इसका अन्दाज़ा लगाया जा सके कि विद्यार्थी क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं। इससे शिक्षकों को किसी भी विषय के लिए दिए जाने वाले निर्देशों की योजना बनाने में मदद मिलती है। इस समय स्थितियाँ बेहद जटिल हैं। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे पिछली कक्षाओं में सीखी गईं ढेरों योग्यताओं में बच्चों के सीखने के स्तर का निदान करेंगे। इस परिस्थिति में पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने के लिए ज़रूरी योग्यताओं में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए सीखने की सीढ़ी एक उपयोगी उपकरण हो सकती है। इस पद्धति से पिछली कक्षाओं के समूचे ज्ञान व कुशलताओं को कक्षा में दोहराने की बजाय शिक्षक को सीखने में आई कमियों को पूरा करने में और मौजूदा पाठ्यक्रम के लिए ज़रूरी सहायक इन्तज़ाम करने में मदद मिल सकेगी।

हर विद्यार्थी और हर कक्षा अलग हैं और अलग-अलग राज्यों, ज़िलों और गाँवों में इनकी स्थिति भी अलग-अलग होगी क्योंकि स्कूलों के बन्द होने के दौरान जिस तरह के हस्तक्षेप इनको मिले हैं उनकी गुणवत्ता में बहुत अन्तर रहा है। कुछ राज्य सरकारों ने लॉकडाउन और स्कूलों के बन्द होते ही सीखने के समुदाय-आधारित कार्यक्रम शुरु कर दिए और कुछ स्कूलों में ऑनलाइन कक्षाएँ भी शुरू कर दी गईं। हालाँकि ऐसे शिक्षण कार्यक्रमों और ऑनलाइन शिक्षा की कारगरता काफ़ी सन्देहास्पद है लेकिन शिक्षक को इस बात की ठीक-ठाक समझ होगी कि स्कूल बन्द होने के दौरान उनके विद्यार्थियों को किस तरह हस्तक्षेप मिला। इस समझ के आधार पर शिक्षक उचित नैदानिक उपकरण डिज़ाइन कर सकेंगे और अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए दिशा-निर्देशन की योजना बना सकेंगे। शिक्षण-अधिगम का ऐसा माहौल बनाने के लिए जो बच्चों की विविध ज़रूरतों को पूरी कर सके यह ज़रूरी है कि मूल्यांकन के डिज़ाइन और इस्तेमाल में शिक्षक को स्वायत्तता हो।

अलग-अलग विषयों के अलग-अलग क्षेत्रों के लिए नैदानिक मूल्यांकनों की योजना व डिज़ाइन बनाई जानी चाहिए। मिसाल के लिए, भाषाओं में मौखिक अभिव्यक्ति, पठन कौशल, बोध के साथ पढ़ना व लेखन कौशल; और गणित में संख्याएँ, मापन, पैटर्न व आँकड़ों का उपयोग। वर्कशीट में विविध क़िस्म की मूल्यांकन पद्धतियाँ शामिल होनी चाहिए। इनमें मौखिक सवाल, बहु-वैकल्पिक सवाल, निबन्धात्मक सवाल, प्रोजेक्ट और गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए जिनमें प्रदर्शन के आधार पर विषय के अलग-अलग क्षेत्रों में विद्यार्थी के सीखने के स्तर का मापन सम्भव होगा। यह भी ज़रूरी है कि मूल्यांकन में हर बच्चे के लिए अलग नोट शीट हो ताकि प्रत्येक विद्यार्थी की अधिगम हानि और ग़लतफ़हमियों को दर्ज किया जा सके। विद्यार्थियों के सीखने के बारे में शिक्षक वैध अवलोकन तभी कर सकते हैं जब मूल्यांकन के आइटम सम्बन्धित विषय क्षेत्र की अपेक्षित संज्ञानात्मक कुशलताओं से जुड़ी बुनियादी योग्यताओं से ठीक प्रकार सम्बद्ध हों। साथ ही, मूल्यांकन आइटमों को बढ़ते क्रम में भी होना चाहिए ताकि विद्यार्थी के सीखने के स्तर का निदान हो सके।

यहाँ हम हिन्दी में पठन कौशल की जाँच के लिए एक नैदानिक मूल्यांकन वर्कशीट का नमूना दे रहे हैं जो चौथी व पाँचवीं कक्षा में इस्तेमाल की जा सकती है। इसमें अगर विद्यार्थी समान शब्दों पर गोल घेरा बना पाता/ पाती है तो वह स्तर-1 पर है;

और अगर शब्दों को चित्रों से जोड़ पाता/ पाती है व परिचित अथवा अपरिचित पाठ को पढ़ने में दिलचस्पी दिखाता/ दिखाती है तो वह स्तर-2 पर है। अगर विद्यार्थी विभिन्न क़िस्म के पाठ पढ़ सकता/ सकती है (जैसे कि अख़बार, बाल पत्रिकाएँ, होर्डिंग वग़ैरह) तो वह स्तर-3 पर है। दूसरे विषयों के लिए भी ऐसी वर्कशीट बनाई जा सकती हैं।

चरण-3 : शिक्षा शास्त्रीय पद्धतियाँ डिज़ाइन करना

महामारी के असर के चलते कक्षा स्तर की सीमाएँ धूमिल पड़ गई हैं। किसी कक्षा में जिस स्तर की योग्यताओं की अपेक्षा की जाती है, सम्भव है कि उस कक्षा के विद्यार्थियों ने वह योग्यताएँ न हासिल की हों। ऐसी स्थिति में, कक्षा में शिक्षण पद्धति की योजना व संचालन पर गम्भीरता से सोचना होगा। शिक्षण को

स्तर-1
1.1 हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
शिक्षक बच्चों को एक कविता लय में पढ़कर सुनाएँगे और फिर कविता में **म** और **ल** पर गोला लगाने को कहेंगे। मुर्ग़ी माँ घर से निकली झोला ले बाज़ार चली चूज़े बोले चें चें चें माँ हम भी क्या साथ चलें?
1.2 जानी-पहचानी वस्तुओं के नाम पहचान और पढ़ पाते हैं (जो आमतौर पर किताबों में होते हैं, जैसे कि आम, अनार, ख़रगोश, कबूतर)
यह किसका चित्र है?  सही उत्तर पर गोला बनाइए : (क) घण्टा (ख) घर (ग) घड़ी (घ) घड़ा
स्तर-2
2.1 छोटे वाक्य, कहानियाँ व कविताएँ पढ़ पाते हैं। 2.2 अपने स्तर और पसन्द के अनुसार तरह-तरह की रचनाएँ/ सामग्री – कहानी, कविता, चित्र, पोस्टर आदि – आनन्द के साथ पढ़ते हैं।

नीचे दी गई कविता को उचित हाव-भाव के साथ पढ़िए :

बहुत जुकाम हुआ नन्दू को,
एक रोज़ वह इतना छींका।
इतना छींका, इतना छींका,
इतना छींका, इतना छींका।
सब पत्ते झड़ गए पेड़ के,
धोखा हुआ उन्हें आँधी का।

स्तर-3

3.1 अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री को समझ कर पढ़ते हैं।

नीचे दिए अख़बार के अंश को पढ़ कर सुनाइए।

यूपी में शीतलहर का प्रकोप जारी, कई इलाक़ों में आज व कल बारिश के आसार, बढ़ेगी ठण्ड



उत्तर प्रदेश में जारी शीतलहर का प्रकोप और गहरा सकता है। मौसम विभाग ने अगले 24 घण्टों के दौरान पूरे उत्तर प्रदेश में कुछ स्थानों पर बारिश होने या गरज चमक के साथ बौछारें पड़ने की चेतावनी जारी की है। मौसम विभाग ने आम जन से निवेदन किया है कि वे बहुत ज़रूरी काम होने पर ही अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए घर से बाहर जाने का निर्णय लें।

कक्षा में मौजूद अलग-अलग स्तर के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर के अनुरूप बनाना विभेदन का बेहद अहम हिस्सा है। कक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें शिक्षक अलग-अलग स्तर की योग्यताओं, संसाधनों, विषय-वस्तुओं, शिक्षण प्रक्रियाओं और सीखने के माहौल में विभेद कर पाते हों।

सीखने की सीढ़ी के अनुसार तैयार की गई नैदानिक मूल्यांकन वर्कशीट में विद्यार्थी द्वारा हासिल की गई योग्यताओं के बारे में मिली जानकारी ही विभेदन का आधार होती है। सीखने के स्तर के आधार पर शिक्षक विद्यार्थियों को अलग-अलग समूहों में रख सकते हैं। विद्यार्थियों को उस कक्षा में अपेक्षित योग्यता के स्तर तक लाने के लिए हर समूह में अलग-अलग पद्धतियाँ अपनाई जा सकती हैं। यह ध्यान में रखना ज़रूरी है कि बच्चों ने स्कूल बन्द होने से पहले अपेक्षित योग्यताएँ हासिल की थीं लेकिन बहुत लम्बे समय तक स्कूल से दूर रहने के कारण सम्भव है कि वे उन हुनरों को भूल गए होंगे। नैदानिक मूल्यांकन वर्कशीट से शिक्षक को यह जानने में मदद मिलेगी कि किस तरह की योग्यताओं को हासिल करने में बच्चों को मदद की ज़रूरत है और किस तरह की योग्यता वे ख़ुद से ही हासिल कर सकते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में पाठ्यचर्या और शिक्षण-अधिगम के माहौल के बदले होने की सम्भावना है और ऐसे में विद्यार्थियों को समूहों में बाँट कर उसके आधार पर पाठ्यचर्या का परिवर्तनशील पुनर्गठन वक़्त की माँग है। हर बच्चे के सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हर कक्षा में बहु-कक्षाई और बहु-स्तरीय शिक्षण पद्धति को अपनाने की भी ज़रूरत है।

नीचे प्राइमरी स्तर में पठन कौशल के सन्दर्भ में बनाए गए समूहों का एक नमूना दिया गया है। शिक्षक के लिए ज़रूरी है कि वह हर समूह के विद्यार्थियों के लिए उचित शिक्षण पद्धति की योजना व डिज़ाइन बना कर उसे अमल में लाए।

समूह-1
वे बच्चे जो अक्षरों व ध्वनियों की पहचान नहीं कर पा रहे हैं।
समूह-2
वे बच्चे जो अक्षरों को उनकी ध्वनि से तो जोड़ पा रहे हैं लेकिन शब्दों को सम्बन्धित चित्रों से नहीं जोड़ पा रहे हैं।
समूह-3
वे बच्चे जो अक्षरों व शब्दों के साथ मोटे तौर पर सहज हैं लेकिन छोटी कविताओं व कहानियों को पढ़ने में परेशानी का सामना कर रहे हैं।
समूह-4
वे बच्चे जो परिचित पाठों को तो आसानी से पढ़ सकते हैं लेकिन अपरिचित पाठों को पढ़ने में सक्षम नहीं हैं।

सार-संक्षेप

किसी भी कक्षा में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में जिस तरह के अन्तर मौजूद हैं उसके मद्देनज़र राष्ट्रीय या राज्य-स्तर पर बनाए गए मानकीकृत व केन्द्रीकृत मूल्यांकन वर्तमान परिदृश्य में कारगर नहीं होंगे। केन्द्रीय, राज्य व ज़िला स्तर के संगठनों के लिए ज़रूरी है कि वे बुनियादी योग्यताओं की पहचान करने और उनको सीखने की सीढ़ी पर चरणबद्ध करने, नैदानिक मूल्यांकनों के निर्माण के लिए शिक्षकों का पेशेवर विकास करने, मूल्यांकन से मिली जानकारी को कक्षा के अनुरूप निर्देशों में ढालने और सीखने में हुए नुक़सान को मौजूदा कक्षा की पाठ्यचर्या से समेकित करने के तरीक़ों की खोज के हर सम्भव प्रयास करें।



आँचल चोमल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के मूल्यांकन कार्य की प्रमुख हैं। उनके काम में विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक एजुकेटरों और शैक्षणिक संस्थानों को मूल्यांकन सम्बन्धी सेवाएँ (मूल्यांकन के ख़ाके, उपकरण, कोर्स, सलाह) देना शामिल है। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता से भूगोल में स्नातक और इसी विषय में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सेंटर फ़ॉर स्टडीज़ इन रीजनल डेवेलपमेंट से स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की है। उनसे aanchal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।



शिल्पी बनर्जी अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन में संकाय सदस्य हैं। कक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप व्यावहारिक गुणवत्ता के मूल्यांकन प्रोटोटाइपों का विकास, मूल्यांकन डिज़ाइन और बड़े पैमाने के मूल्यांकन डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण उनके शोध के पसन्दीदा विषय हैं। वे शिक्षक एजुकेटरों, शिक्षा कर्मियों, शिक्षा कार्यकर्ताओं और शिक्षा के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को मूल्यांकन से जुड़े विभिन्न आयामों पर कोर्स भी करवाती हैं। उन्होंने इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इनफ़ॉरमेशन टेक्नॉलाजी, बेंगलूरु से शैक्षणिक मूल्यांकन में पीएचडी की है। उनसे shilpi.banerjee@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : लोकेश मालती प्रकाश